अतिया नूर

हमें अपना समझ लेते तुम्हारा क्या बिगड़ जाता
ज़रा सा दिल जो रख लेते हमारा क्या बिगड़ जाता।

अगर रूठे भी थे हम तो मनाने के लिए इक दिन
हमें आवाज़ दे देते दुबारा क्या बिगड़ जाता।

ज़माने भर में चर्चे हैं तुम्हारी दिलनवाज़ी के
करम हम पर जो फ़रमाते ख़ुदारा क्या बिगड़ जाता।

गुज़रकर इश्क़ की हद से किसी दिन मेरी ख़ातिर तुम
फ़लक से तोड़ लाते कोई तारा क्या बिगड़ जाता।

शब ए फ़ुरक़त हमारी आँख से रुकते नहीं आँसू
तुम आकर देख जाते ये नज़ारा क्या बिगड़ जाता।

तुम्हारे दिल से क्या "अतिया" जहाँ से भी चली जाती
किया होता अगर तुमने इशारा क्या बिगड़ जाता।

डॉ. कविता विकास

खेत, पर्वत, पेड़, झरने और समंदर देखकर
रश्क होता है मुझे धरती के जेवर देखकर

नीर, नभ, सूरज, शशि, कचनार, केसर देखकर
सिर झुका जाता है मौला तेरे जौहर देखकर

आँख नम हो जाती है उजड़े घरों की बस्ती पर
बीता बचपन था जहाँ वह प्यारा नैहर देखकर

जो उगाती नफ़रतों की फस्ल हैं इस मुल्क में
रंज होता है नयी नस्लों के तेवर देखकर

था नया ही उड़ना सीखा एक गौरेया ने अभी
आज है सहमी हुई बिखरे हुए पर देखकर

उसकी ख़ामोशी पर मत जा, आग भी वह आब भी
दंग रह जाएगा एक तूफ़ान भीतर देखकर

एक मुद्दत हो गयी तुमको मिले, बातें किये
चंद पल रुक जाओ जी लूँ तुमको जीभर देखकर

कर ले पैदा खुद में जज़्बा मुश्किलों से लड़ने का
फिर न हट पायेगा पीछे, राह दूभर देखकर

ISSN:2583-8849